International Journal of Applied Research 2015; 1(2): 122-123

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(2): 122-123
www.allresearchjournal.com
Received: 19-12-2014
Accepted: 22-01-2015

रजनीश कुमार सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, सचिदानन्द सिन्हा कॉलेज औरंगाबाद, बिहार

Correspondence:
रजनीश कुमार सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, सचिदानन्द सिन्हा कॉलेज औरंगाबाद, बिहार

राष्ट्रीय आन्दोलन में नारी की सहभागिता

रजनीश कुमार सिंह

राष्ट्रीय आन्दोलन पर यदि हम सरसरी दृष्टि डालें तो हम पाते हैं कि मूलतः यह पुरुष प्रधान आन्दोलन था परन्तु समकालीन भारतीय इतिहास का एक आश्चर्यजक पहलू था राष्ट्रीय आन्दोलन में नारी वर्ग का द्रुत प्रवेश। यह प्रक्रिया भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से आरम्भ हो गयी थी परंतु 1919 के बाद इसमें गुणात्मक परिवर्तन आयां 20वीं शताब्दी में राष्ट्रवादियों के लिये मुख्य मुद्दा था राष्ट्र के भावी निर्माण में स्त्री वर्ग की भूमिका अर्थात् क्या उनकी सहभागिता आवश्यक है और यदि है तो किस हैसियत में? एक समान साथी के रूप में, एक नेता के रूप में अथवा एक अनुयायी के रूप में। स्त्री वर्ग की सहभागिता एक देशव्यापी प्रक्रिया थी। फिर स्त्री वर्ग ने अपने सामाजिक तथा पारिवारिक कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुये राष्ट्रीय आन्दोलन में हिस्सा लिया।

राष्ट्रीय आन्दोलन के शुरूआती चरण में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी का अभाव था लेकिन जैसे–जैसे समय बढ़ता गया इनके स्तर पर सक्रिय भागीदारी बढ़ती गयी। 1905 में बंगाल के विभाजन ने राष्ट्रीय आन्दोलन में स्त्री सहभागिता में नई स्फूर्ति पैदा की। पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन, स्त्रियों के लिये विशेष सभाओं तथा नये राष्ट्रीय समूहों के गठन के माध्यम से स्त्रियों को राष्ट्रीय आन्दोलन में हिस्सा लेने के लिये प्रेरित किया गया परन्तु इस दौर में भी स्त्री भागीदारी निजी एवं सार्वजनिक दोनों ही स्तरों पर निष्क्रिय ही रही। 1910 तथा 1920 के बीच स्त्रियों की राजनीतिक गतिविधियों में काफी वृद्धि हुई। बागी क्रान्तिकारियों एवं आतंकवादियों को शरण देने तथा गुप्त संदेशवाहक के रूप में स्त्रियों की काफी मांग थी। बंगाल के इतिहास में पहली बार स्त्रियों ने अपने घरों से भागकर क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय हिस्सा लिया तथा सजायें भी भुगती। इस चरण में कुछ ब्रिटिश महिलायें भी भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की सक्रिय समर्थक बन गयी। इनमें प्रमुख थी–ऐनी बेसेन्ट, सिस्टर निवेदिता आदि। मोतीलाल नेहरू तथा जवाहरलाल के राजनीति में प्रवेश से बहुत पहले इन्होंने नारी समस्याओं को उठाना शुरू कर दिया था। स्त्री विषयों से सम्बंधित तीन पत्रिकायें– स्त्रीदर्पण, गृहलक्ष्मी तथा चाँद इलाहाबाद से ही प्राकशित होने शुरू हो गयी थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 1917 के अधिवेशन में औपचारिक रूप से पहली बार नारी अधिकारों पर अपनी स्थिति स्पष्ट की और शिक्षा की माँग की तथा स्थानीय सरकार से संबंधित निर्वाचित संस्थाओं के चुनाव एवं योग्यता के लिये स्त्रियों पर भी वही मानदण्ड लागू होना चाहिये जो पुरुषों पर होते हैं।

1920 के बाद गाँधी के अनोखे व्यक्तित्व तथा रचनात्मक कार्यक्रमों के सन्दर्भ में नारी वर्ग के राजनीतिकरण में अभूतपूर्व शक्ति तथा तेजी आयी। अहिंसा तथा स्वराज प्राप्ति के वृहत्तर कार्यक्रम में गाँधी ने पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को अधिक महत्व दिया। क्योंकि गांधी के अनुसार 'स्त्रियों की निष्क्रियता, त्याग की भावना तथा दुख झेलने की क्षमता पुरुषों से अधिक होती है। औरतों के लिये निष्क्रिय विरोध के माध्यम से स्वतंत्रता आन्दोलन में सहभागिता को तत्काल सामाजिक मान्यता प्राप्त हो गयी क्योंकि इसने सामान्य पारिवारिक ढांचे तथा भारतीय नारी की परम्परागत छवि में हस्तक्षेप किये बिना उन्हें परिवार से बाहर नारीगत गतिविधियों में भाग लेने का अवसर दिया। सुचेता कृपलानी के अनुसार गाँधी ने केवल औरतों में ही नहीं बल्कि औरतों के संरक्षकों (पति, पिता, भाई) में भी एक विश्वास जागृत किया। अपने उच्च प्रतिष्ठित व्यक्तित्व की तरह गाँधी ने राजनीतिक गतिविधियों के भी उच्च स्तरीय मानदण्ड निश्चित किये। अतः जब स्त्रियां घर से बाहर राजनीतिक जीवन में भाग लेती थी तो उनके परिवार वालों को विश्वास होता था कि वे सुरक्षित होगी।

अतः नारी की इन स्वभावगत विशेषताओं को देखते हुये गाँधीजी ने इनको आन्दोलन के लिये प्रेरित किया। असहयोग आन्दोलन में भी स्त्रियों ने बड़े पैमाने पर हिस्सा लिया। इसके अलावा गांधीजी ने स्त्रियों को स्वदेशी अपनाने तथा स्वदेशी का उद्देश्य प्राप्त करने के लिये चरखे का प्रयोग करने की अपील की। गांधीजी ने स्वदेशी को लोकप्रिय बनाने का उत्तरदायित्व औरतों पर ही डाला। अपने स्तर पर कतायी के अतिरिक्त औरतों ने जन–आन्दोलन में हिस्सा लिया, शराब की दुकानों पर धरना दिया, प्रदर्शन में हिस्सा लिया, गिरफ्तारियां दी, जेल गई तथा पुलिस की लाठियां तथा गोलियां

खायी। अपने पतियों तथा पुरुष समाज की अवज्ञाकारी सेविकाओं से उपर उठकर वे राजनीतिक आन्दोलनों तथा कार्यक्रमों में बड़े पैमाने पर हिस्सा लेने वाले समान नागरिक के स्तर तक पहुंच गई। हालाकि असहयोग आन्दोलन में भाग लेने वाली स्त्रियों की संख्या अपेक्षाकृत कम थी परन्तु उनकी सहभागिता का महत्व संख्या में न होकर इस बात में था कि स्त्रियों ने स्वयं आगे बढ़कर सभाओं तथा प्रदर्शनों का आयोजन किया। यह उस स्त्री वर्ग के लिये काफी महत्वपूर्ण था जिसे किसी भी तरह की पहल करने से वंचित रखा गया था। साथ ही यह भी एक तथ्य है कि इसमें विशिष्ट संभ्रान्त परिवारों की महिलायें आगे आयी। गांधीजी द्वारा चलाये गये नागरिक अवज्ञा आन्दोलन में भी स्त्रियों ने अपना योगदान प्रदान किया। स्त्रियों ने घरों की चारदीवारी से बाहर निकलकर इस आन्दोलन को गति प्रदान की। गांधीजी द्वारा चलाये गये नागरिक अवज्ञा आन्दोलन में नमक कानून का उल्लंघन किया गया तथा जगह–जगह शराब तथा विदेशी कपड़ों की दुकानों के सामने धरना प्रदर्शन किया गया। इन गतिविधियों में स्त्रियों ने सक्रिय रूप से अपनी भागीदारी सुनिश्चित की और पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर इस आन्दोलन को उर्जा प्रदान किया। नागरिक अवज्ञा आन्दोलन के दौरान कुछ विशिष्ट महिलाओं की भागीदारी रही जिनमें कमला नेहरू, सरोजिनी नायडू और उनकी पुत्री पद्मजा नायडू तथा रूकमणी लक्ष्मीपति का नाम प्रमुख है। नेहरू परिवार की प्रमुख सदस्य कमला नेहरू ने इस आन्दोलन में अपनी सक्रिय भागीदारी निभायी। इसके अलावा आन्दोलन में गांधीजी के साथ सरोजनीनायडू प्रमुख सहयोगी रही। सरोजनी नायडू भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सक्रिय सदस्यों में से एक थी तथा कांग्रेस की महिला शाखा का प्रतिनिधित्व इन्हें सौपा गया था। द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में महिला संगठनों ने सरोजनी नायडू को अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया था। इस आन्दोलन के दौरान दक्षिण–भारत में रूक्मिणी लक्ष्मीपति सक्रिय थी। इन्होंने 1931 में सी राजगोपालचारी के साथ वेदारण्यम तक की यात्रा कर नमक कानून का उलंघन किया था। इन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। इस प्रकार ये एक पहली महिला राजनीतिक वंदी बनी थी। इस प्रकार हम देखते हैं कि इस आंदोलन के दौरान भारतीय महिलाओं ने पुरुषों के बराबर अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। हालांकि इस आन्दोलन को अंग्रेजों ने दबा दिया लेकिन इस आन्दोलन को सफल बनाने में महिलाओं का योगदान प्रबल रूप से सामने आया।

इसी क्रम में उस समय देश में क्रान्तिकारी आन्दोलन को भी बढ़ावा मिल रहा था और इन क्रांतिकारी आंदोलन में भी स्त्रियों ने बढ़–चढत्रकर हिस्सा लिया और अंग्रेजों के खिलाफ साहसिक कदम उठाया। इनमें बीना दास, शांतिघोष एवं सुनिति चौधरी, कमलादासगुप्ता, कल्पनादत्त, प्रीतिलता वाडेदर आदि का नाम प्रमुख है। इस आन्दोलन के दौरान वीना दास ने बंगाल के गवर्नर जैक्सन पर पिस्तौल से गोली मारी। इसके अलावा शान्तिघोष तथा सुनिति चौधरी ने मजिस्ट्रेट स्टेवेंस को गोली मारकर हत्या कर दी। सूर्यसेन द्वारा संचालित चटगांव पर हमले के दौरान प्रीतलता वाडेकर ने चिटगांच क्लब पर हमले का नेतृत्व किया था और कैद होने से बचने के लिये इन्होंने आत्महत्या कर ली थी। इस प्रकार क्रान्तिकारी आन्दोलन के दौरान भी भारतीय महिलाओं ने अपना विशिष्ट योगदान दिया। इसके अलावा गाँधीजी द्वारा चलाये गये भारत छोड़ो आन्दोलन में भी महिलाओं ने सक्रिय रूप से अपनी भागीदारी निभायी। इस आन्दोलन के दौरान कांग्रेस के बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया था। तब आन्दोलन की बागडोर महिलाओं में प्रमुख रूप से अरुणाआसफअली, सुचेताकृपलानी आदि ने संभाली। अरुणाआसफअली भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान भूमिगत आन्दोलन की प्रमुख नेता थी। नेहरु ने इनको ष्वदम व्ि्पदकपंश्े ठतंअम ॅवउमदश् कहा। इसके अलावा उषा मेहता ने रेडियो के द्वारा गुप्त प्रसारण का जिम्मा संभाला। बाद में इस आंदोलन को भी अंग्रेजों ने दबा दिया। लेकिन अब अंग्रेजों के सामने ज्यादा विकल्प नहीं था आज नहीं तो कल भारत को आजाद करना ही था अतः इस आन्दोलन ने भारतीय आजादी की राह आसान कर दी और अंग्रेजों के हौसले को पस्त कर दिया। आगे ब्रिटेन में एटली की सरकार आयी और हाउस ऑफ कामन्स में घोषणा की कि अंग्रेज जून 1948 ई. के पहले भारतीयों को सत्ता सौंप देंगे अैर इसी के तहत 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ और सदा के लिये अंग्रेजी हुकूमत से छुटकारा मिल गया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत की आजादी के लिये देश में जितने भी आन्दोलन चलाये गये उनमें भारतीय महिलाओं के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। इन्होंने अपना घर–परिवार, रिश्ते–नाते आदि त्यागकर राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं के साहसिक कदमों को नकारा नहीं जा सकता। इन्होंने आजादी के लिये पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर आन्दोलनों में अपनी सहभागिता सुनिश्चित की। अतः राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं के साहसिक कदमों को नकारा नहीं जा सकता। इन्होंने आजादी के लिए पुरुषों के साथ कदम मिलाकर आन्दोलनों में हिस्सा लिया जो आगे चलकर देश की आजादी का पर्याय बना। हमारा देश आज भी इनके द्वारा किये गये त्याग व बलिदान पर गौरवान्वित महसूस करता है।

संदर्भ

1. एंड्रयूज.सी.एफ.
   महात्मा गांधी एट वर्क, न्यूयार्क, द मैकमिलन कंपनी, 1931
   महात्मा गांधी : हिज़ ओन स्टोरी 1930
   महात्मा गांधीज़ आइडियाज़ 1930
2. एशे ज्योफ्री
   गांधी : ए स्टडी इन रिवॉल्यूशन न्यूयार्क स्टेन एंड डे, 1968, लंदन हीनेमैन, 1968
3. आजाद मौलाना अबुल कलाम
   इंडिया विन्स फ्रीडम, बांबे ओरिएंट लांगमैन, 1955
4. बलवंत सिन्हा
   अंडर द शैल्टर ऑफ बापू, अहमदाबाद, नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस, 1962
5. बर्नेस एथेल
   नैकेड फकीर, लंदन विक्टर गौलैन्वज़, 1931
6. बैसविक एथेल
   टेल्स ऑफ हिंदू गॉड्स एंड हीरोज़, बांबे, जयको पब्लिशिंग हाऊस, 1959
7. भट्टाचार्य
   महात्मा गांधी, द जर्नलिस्ट, बांबे, एशिया पब्लिशिंग हाऊस, 1963
8. बिर्केनहैड
   अर्ल हैलिफैक्स, बोस्टन, ह्यूटन, मिफिन, 1966
9. बिडला जी.डी.
   इन द शैडो ऑफ महात्मा, बांबे, ओरिएंट लांगमैंस, 1955